विश्व पुस्तक दिवस पर साहित्य अकादमी ने करवाई गोष्ठी

प्रवक्ताओं ने तकनीक व पुस्तकों के भविष्य संबंधी अपने विचार साझे किए

विश्व पुस्तक दिवस के मौके पर गोष्ठी में भाग लेते हुए लेखक व विद्वान।

नई दिल्ली, 24 अप्रैल (मिसरदीप भाटिया): विश्व पुस्तक दिवस के मौके पर साहित्य अकादमी ने रबिन्द्र भवन में अपने कांफ्रेंस हाल में 'टैक्नालोजी व पुस्तकें : पहचान व लेखन का भविष्य' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत में अकादमी के सचिव डा. के. श्रीनिवासराव ने प्रवक्ताओं को पुस्तकें भेंट करके स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागती बयान में कहा कि सोशल मीडिया ने लेखन व पाठक के बीच की दूरी को समाप्त कर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संगीत नाटक अकादमी की प्रधान डा. संध्या पुरेचा ने की। उन्होंने कहा कि पुस्तकें कभी समाप्त नहीं होंगी। आज की नौजवान पीढ़ी को इंटरनैट द्वारा अपनी पसंद की पुस्तक आसानी से पढ़ने को मिलती है, चाहे वह दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न हो। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि हमें पुस्तकें पढ़नी चाहिएं, लिखनी चाहिएं। उन पर सवाल करने चाहिएं और विद्वानों के साथ समय बिताना चाहिए। पत्रकार जयप्रकाश पांडे ने अपने ब्यान में कहा कि जब तकनीक नहीं थी तब भी शब्दों का बोलबाला था, फिर धीरे-धीरे लिपी का विकास हुआ। उन्होंने कहा कि पढ़ने व लिखने के साथ-साथ हमें उनकी गुणवत्ता का भी ध्यान रखना होगा। प्रकाशक व सम्पादक श्रीमती मेरू गोखले ने टिकटाक से बुक टाक संबंधी बातचीत की। उन्होंने कहा कि हमें टैक्नोलोजी का प्रयोग करते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज दुनिया के 90 प्रतिशत लेखकों को सम्पादक नहीं मिलते और उनको अपनी रचना बिना सम्पादन के छापनी पड़ती हैं।

इस ज़रूरत को ध्यान में रखते हुए उन्होंने एक एप बनाया है जो सम्पादन का कार्य आसानी से करता है। कार्यक्रम में चित्रकार प्रेम सिंह ने पढ़ने व लिखने के भविष्य संबंधी बात की। उन्होंने कहा कि पुस्तक हमेशा रहने वाली वस्तु है। डांसर सिंधू मिश्रा ने अपने बयान में बताया कि आज सभी कलाओं में श्रोताओं की कमी है। सूचना क्षेत्र के साथ जुड़ी श्रीमती ऊषा मुजू मुन्शी ने पावर प्वाइंट पेशकारी द्वारा अपने विचार पेश करते कहा कि अब पुस्तकें चल कर पर्दे पर आ गई हैं। अब कहानियां सिर्फ पन्नों पर बिखरी नहीं रहतीं। हिंदी नवी तेजिंद्र सिंह लूथरा ने कहा कि यदि हमारे पूर्वजों ने लिपी की खोज न की होती तो आज हम ए.आई. तक नहीं पहुंच सकते थे। हमें अपने आगम क्षेत्र से बाहर निकलना होगा और खुले दिल से नई तकनीक का स्वागत करना होगा। कार्यक्रम का संचालन अकादमी के उप सचिव डा. देविन्द्र कुमार देवेश ने किया।